अनुक्रमणिका

सञ्चालकीय निवेदन

पुरोवचन

व्याख्यान पहला १–१६

आचार्य हरिभद्र के जीवन की रूपरेखा :

जन्मस्थान ५; माता-पिता ७, समय ८; विद्याभ्यास १०, भवविरह १३, पोरवाल जाति की स्थापना १६

व्याख्यान दूसरा १७–३७

दर्शन एवं योग के सम्भवित उद्भवस्थान–उनका प्रसार–
गुजरात के साथ उनका सम्बन्ध–उनके विकास में हरिभद्रसूरि का स्थान :

उद्भवस्थान १७; प्रसार २६, गुजरात के साथ सम्बन्ध २६, आचार्य हरिभद्र का स्थान ३५; समत्व ३५; तुलना ३५, बहुमानवृत्ति ३६; स्वपरम्परा को भी नई दृष्टि और नई भेंट ३६, अन्तर मिटाने का कौशल ३६

व्याख्यान तीसरा ३९–६०

दार्शनिक परम्परा में आचार्य हरिभद्र की विशेषता :

षड्दर्शनसमुच्चय ४०; शास्त्रवार्तासमुच्चय ४९

व्याख्यान चौथा ६१–७७

योग-परम्परा मे आचार्य हरिभद्र की विशेषता–१

योगशतक ७३, योगविंशिका ७६

व्याख्यान पाँचवाँ ७८–१०५

योग-परम्परा मे आचार्य हरिभद्र की विशेषता–२

योगदृष्टिसमुच्चय और योगबिन्दु ८०, उपसहार १०५

परिशिष्ट १ .... १०७

परिशिष्ट २ .... १०८

शब्दसूची ११०

शुद्धिपत्रक १२२